D.El.Ed. IInd Sem.

Subject :- S.St.

Topic :- बादल

बादल मुख्यत: हवा के रुद्धोष्म (Adiabatic) प्रक्रिया द्वारा ठण्डा होने पर उसके तापमान के ओसांक से नीचे गिरने से बनते है। रुद्धोष्म प्रक्रिया का आशय है हवा के स्वत: फैलने अथवा कम होने से होने वाला परिवर्तन।

नेफोमीटर से बादलो की दिशा एवं गति का मापन किया जाता है

ऊँचाई के आधार पर बादलो का वर्गीकरण

ऊँचे मेघ प्राय: 6000 मी. से अधिक ऊँचाई पर बनने वाले मेघो मे पक्षाभ, पक्षाभ कपासी तथा पक्षाभस्तरीय मेघ है।

मध्य मेघ 2000-6000 मी० की ऊँचाई पर उपस्थित मेघो मे मध्य कपासी एवं स्तरी मेघ शामिल है।

निम्न मेघ धरातल से 2000 मी० की ऊँचाई तक बनने वाले मेघो मे स्तरी तथा स्तरी कपासी, वर्षास्तरी, वर्षाकपासी मेघ सम्मिलित है।

ऊर्ध्वाधर विकास वाले मेघ (आधार से शीर्ष तक- 18 km) इनमे कपासी मेघ तथा कपासी वर्षा मेघ शामिल है।

- अत्यधिक वर्षा वाला मेघ → वर्षास्तरीय
- मोती की माला वाला मेघ → पक्षाभ मेघ
- गोभी के फूल के समान मेघ → कपासी मेघ
- भूमध्यरेखीय प्रदेश मे दिखने वाला मेघ → कपासी वर्षा

Scanned with CamScanner